सम्मोहन एक कला

अशोक 'मानव'

अपने गुण में मिला लने की कला को सम्मोहन कहते हैं। मानव जीवन प्रकृति का हर गुण अपने अन्दर लिए होता है जब जैसा चाहे वैसा गुण का आदान प्रदान कर सकता हैं इस सम्मोलन की कुँजी इच्छाशक्ति होती है। हलचल मुक्त जीवन में व्यक्ति जैसा विचार करने लगता है वैसी ऊर्जा उसके शरीर से निकलने लगी है। जिसके लिए छोड़ी जाती है उसके अन्दर भी वैसा विचार पैदा होने लगता है। सम्मोहन के प्रस्ताव रखने से पूर्व ही सहमति मिल चुकी होती है। सम्मोहन सिर्फ मानव जीवन के लिए ही नहीं बल्कि अन्य जीव व पूरी प्रकृति पर किया जा सकात हैं सम्मोहन मानव जवीन अपने शरीर रूपी राकेट से दागता है यह ऊर्जा जितनी अधिक शक्तिशाली होगी उतनी तेज क्रियाशील होगी। जिस विषय से जैसा कार्य लेना हो वैसा विचार निरन्तर छोड़ते रहने से सम्मोहन पैदा होता है इसके पैदा होते ही जीवाणु क्रियाशील हो जाते हैं जा विषय को पूरा करने में लग जाते हैं।

सम्मोहन में विरोधाभाषी व नाकरात्मक विचार कार्य में बाधा पैदा करते हैं। सम्मोहन में सकारात्क सोच विशेष कारगर होती है।

सम्मोहन दो प्रकार का होता है। पहला स्वगुणीय सम्मोहन । दूसरा स्वार्थपूर्ण सम्मोहन। स्वगुणीय सम्मोहन समस्त प्रकृति के लिए होता है जिस गुण का व्यक्ति होता है वैसी ऊर्जा अपने आन्तरिक चुम्बकीय शक्ति से पूरी प्रकृति में कहीं से खींच सकता है। जब प्रकृति का कोई गुण हानिकारक लगने लगे तो उसके विपरीत गुण न बनाकर उसके पक्ष का गुण बनाकर उसे सम्मोहित किया जा सकता है। इस सम्मोहन से हानिकारक तत्वों से बचा जा सकता है। गुण अपने गुण पर प्रहार कभी नहीं करता है। वह सदैव अवगुण पर प्रहार करता है। गुणीय सम्मोहन वासतव में जीवन की एक कला बन सकता है। अपने इस सम्मोहन से कोई भी व्यक्ति अप्रकृति के प्रहार से बच सकता है। यह कला मानव जीवन की सर्वश्रेष्ठ कुंजी है। उदाहरणार्थ आप यह देख सकते हैं कि परिवार का कोई व्यक्ति आपका विरोधी बन जाये और आपका विरोध कभी न करें। उसके दुःख का विचार मन में कभी न लायें तो एक समय ऐसा आता है जब विरोधी व्यक्ति सहयोगी बन जाता है। यह क्रिया सगुणीय सम्मोहन की सर्वश्रेष्ठ धटना हो सकती है।

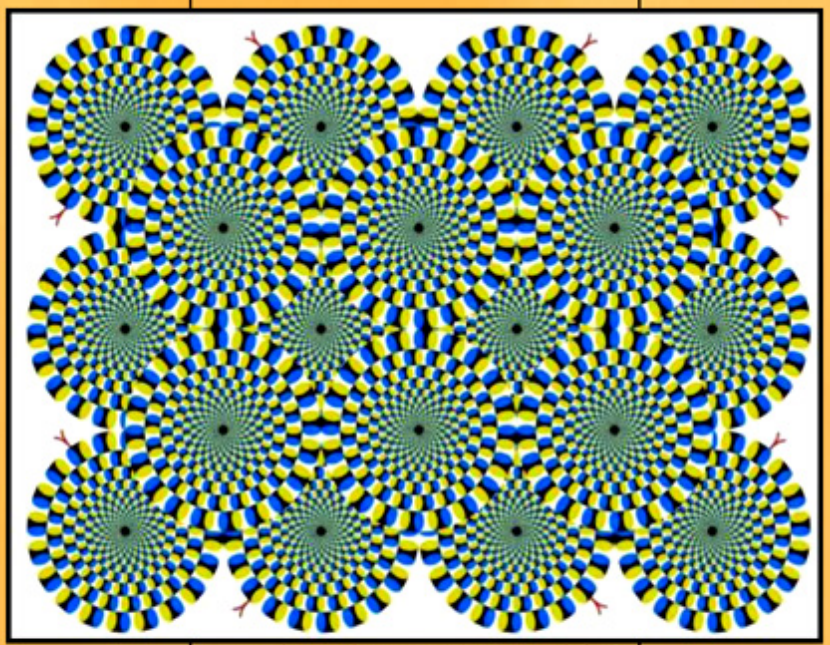

स्वार्थपूर्ण सम्मोहन वर्तमान समय से कुछ ज्यादा ही चल रहा है। इसका सहयोगी कारण स्वार्थ का पर्दा है। इसकी सीमा अपने पराये से बंधी होती रहती है। इस सम्मोहन में व्यकित अपना जाल वहीं फेंकता है। जहाँ से उसे लाभ दिखायी देता है। ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता को नजरअंदाज करके सिर्फ अपनी आवश्यकता को महत्व देते हैं। स्वार्थी सम्मोहन कभी भी धोखा दे सकता है। इसीलिए स्वार्थ सिद्ध करने के लिए कुछ बात होती है। जो सहयोगी लगती है जब कार्य हो जाता है तो विरोधी गुण के नजारे उड़ने लगते हैं। इस गुण से व्यक्ति कभी मित्र नहीं हो सकता है। दोनों अवसर की तलाश में होते हैं।

विरोधाभाषी दृष्टि सम्मोहन के लिए घातक हथियार होता है। जब व्यक्ति से सम्मोहित होकर उससे प्यार करने लगता है तो हमेशा उसकी मदद करना चाहता है। और उसका शुभ सोंचता है। जब कभी स्वगुणीय सम्मोहन स्वार्थपूर्ण सम्मोहन में बदल जाता है तो वही उसका बुरा सोचने लगता है। उसका ऐसा विरोधाभाषी विचार उसके द्वारा छोड़ी गयी सहयोगी ऊर्जा से लड़ने लगता है इस लड़ाई के परिणाम स्वरूप बीमारी पैदा होती है। ऐसे विरोधाभाषी विचार पहले स्वयं का नुकसान करता है फिर उसका जिसके बारे में सोंचता है। सम्मोहन की सर्वश्रेष्ठ क्रिया समस्त प्रकृति के लिए होती है ऐसा करने से व्यक्ति को समस्त प्रकृति का सहयोग मिल जाता है। इस क्रिया से कोई भी व्यक्ति प्रकृति का आनन्द प्राप्त कर सकता है।❐

www.suryaashram.com